## घमण्डी राम

घमण्डी राम के जनम पटना जिला के बिक्रम थाना के बेनी बिगहा गाँव में 9 जनवरी 1946 के भेल । इनकर प्राथमिक सिच्छा गाँव के विद्यालय में भेल, उच्चतर सिच्छा मगध विस्वविद्यालय आउ पटना विस्वविद्यालय में भेल। ई बिहार शिक्षा सेवा संवर्ग के पद पर रहके काम करइत रहलन हे। ई मगही से एम.ए. हथ।

ई मगही मातृभासा के विविध विधा के भंडार भरइत रहलन। नाटक, एकांकी, सब्दचित्र, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, गीतरूपक, कविता, निबंध, लोकगीत आउ प्रबंधकाव्य जइसन विधा पर कलम चलयलन हे। इनकर बहुमुखी प्रतिभा आउ स्तरीय साहित्य सेवा देख के बिहार सरकार राजभासा विभाग 'डा० ग्रियर्सन पुरस्कार' से, बिहार राष्ट्रभासा परिसद्, पटना 'लोकभासा साहित्य सेवा पुरस्कार' से आउ भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली 'डा० अम्बेडकर फेलोसिप अवार्ड' से सम्मानित कयलक हे।

इनकर अबतक मगही आउ हिन्दी में कुल सोलह रचना परकासित हो गेल हे, जेकरा में प्रमुख हे **'माटी के मरम'** (मगही सब्द-चित्र) **'सोहाग के भीख'** (मगही एकांकी संग्रह) **'गीत अदमी के'**, (मगही कविता संग्रह) **'धरती के गीत'** (मगही लोकगीत संग्रह) **'दिल के घाव'** (मगही गजल संग्रह) **'कथा बतीसी'** (मगही लघुकथा संग्रह), **'खोंइछा के चाउर'** (मगही निबंध संग्रह) **'माटी के सिंगार'** (मगही सब्द-चित्र संग्रह) आउ **'एकलव्य'** (मगही महाकाव्य)।

एकरा अलावे इनकर हिन्दी के भी चार गो रचना परकासित हे। ई अप्पन सुललित कंठ से कविता सुनाके मोह लेवऽ हथ। ई अभी सेवा-निवृत होके बल्लमीचक, अनीसाबाद, पटना में साहित्य सेवा कर रहलन हे।

सब्द-चित्र साहित्य के एगो विधा हे जेकरा माध्यम से कोई बेकती के फोटो जस के तस बना देवल जाहे। सब्द-चित्र संस्मरन के एगो विकसित रूप हे जेकरा में सच्चो के कोई अदमी के चित्र खींचल जाहे। सब्द-चित्र के नायक कोई मनगढ़ंत पात्र न होवऽ हे।

सनीचर एगो गाँव–गिराँव के दलित समाज के अइसन पात्र हे जे लेखक के काफी परभावित कैलक। ओकरा माध्यम से गाँव-गिराँव के पूरा परिवेस के चित्र खिंचइत लेखक सनीचर के चरित्र के विसेसता के उजागर कैलन हे। एकर माध्यम से समाजिक मेल-मिलाप के दरसन करावल गेल हे।

# सनीचर

बेनी बिगहा के अखाड़ा आउ खरकपुरा के दह जइसे नामी हल, ओइसहीं चिचौड़ा के सनीचर के जूता नामी हल। इनकर जूता बड़ी दूर-दूर तकले जा हल—बिना विज्ञापन के, बिना कोई परचार के। लोग सपर के इनका हीं जूता खरीदे आवऽ हलन। ऊ जूतो बनावऽ हलन एक नम्बर के, डिजाइन होवे इया न, बाकि टिकाऊ खूब। दू साल खूब धँगच के पेन्हऽ, बीच में टूट गेला पर फेंक आवऽ उनकर कोठरी में। नया करके ऊ अपने से घरे पहुँचा अयतन। गाँव-जेवार के बात हे, एक्के जगह रहेला हे, कउन मुँह लेके ऊ जयतन लोग भिर। कलोटन भाइए हथ, करमू इयारे। पहलाद चचे हथ, बिन्दा सिंह मालिके—केकरा ठगथ—मुखिया के ? सरपंच के ? सब तो अपने हथ—एक्के गाँव, एक्के जेवार के। बिजनेस से जादे चिन्ता उनका अपनापन के हे, भाईचारा के हे। सच पूछऽ तऽ बिजनेस के खेयाल से ऊ जूता बनयबे न करऽ हलन। ई तो उनकर हिरदय के अनुराग हल, मन के मुराद हल। मन में आयल—बइठ गेलन एगो डिजाइन लेके। काटे लगलन चमरा, ठोके लगलन काँटी। सी रहलन हे, ठोक रहलन हे।

सनीचर दू तरह के जूता बनावऽ हलन—चमरुआ आउ कुरुम के। कुरुम के जूता ला चमरा बाहर से मँगावऽ हलन, बाकि चमरुआ घर के चमरा से। गाँव-जेवार के जेतना गोरू-डांगर मरऽ हल, सबके ईहे चीरऽ हलन। ओकरे चाम पका के, सुखा के बड़ी हिसाब से रक्खऽ हलन । ओही चाम से जूता बनावऽ हलन। इनकर ईहे जूता नामी हल, चमरुए जादे बिकऽ हल। पहिले लोग चमरुए पेन्हबे करऽ हलन, आज लेखा सौखीन न हलन। डिजाइन होवे चाहे न, मोलायम होवे के चाही, टिकाऊ होवे के चाही। इनकर जूता लोग के इहे फरमाइस के पुरती करऽ हल। माँग पर धेयान जादे, पुरती पर कम रखऽ हलन। आज ऊ जिन्दा रहतन हल आउ उनकर कला आउ ईमान से लाभ उठावल जाइत हल, तऽ जेवार भर का, प्रान्त से बाहर भी उनकर जूता के माँग बढ़ जाइत हल। एगो अच्छा फैक्ट्री खुल जाइत हल। केतना लोग के गुजर-बसर करे के एगो धंधा चल जाइत हल गाँव-जेवार में।

बाकि ऊ घड़ी कोई धेयान न देलक। ई तो बेचारे अनपढ़ हइए हलन, गाँव के पढ़लो-लिखल लोग एकरा पर धेयान न देलन। जन्ने गेलन ओन्ने अप्पन कला आउ ईमान दुन्नो लेले गेलन। उनकर खनदान के लोग हथ, बाकि ओहू लोग ई धन्धा न सिखलन। हमरा लगऽ हे कि आज के जुग-जमाना के पूरा ज्ञान ऊ लोग के पहिलहीं से हल। जानइत हलन कि आज के लोग ईमान पर न, पइसा पर बिकतन, कला पर न, परचार पर मरतन। एही से उनकर परिवार के कोई ई काम न सिखलक।

उनकर एगो बेटा हे। हरवाही करऽ हे। बाजा बजावऽ हे बिआह-सादी में। एकरा नापसन्द हल ई काम। ई ओही-घड़ी बाप के बोलइत रहऽ हल, झिड़कइत रहऽ हल जब-तब—'अइसन बिजनेस करके का करत जेकरा से कोई लाभ न हे। बड़ाई के पुल बाँधला से पेट भरत ? तोरा तो लोग सीधा जान के तनिए सा बड़ाई कर देत—बस, तुम्मा लेखा फूल जयबऽ, घिरनी लेखा नाचे लगबऽ।'

सचमुच ऊ नाचे लगऽ हलन जब कोई कह देवऽ हल—'सनीचर चा ! तनि अप्पन जूता के करमात देखलावऽ तो।' फिर का हल—एतना कहना हे कि हाथ के जूता पैर में डाल के आ ठुमुक-ठुमुक के नाचे लगथ। कभी दउर के, कभी उछल के जूता के नमूना देखावे लगथ। अन्त में पैर से निकाल के हाथ में लेके दू बाजी फट-फट जमीन पर बजार देथ, दुन्नों के मिलाके पट-पट बजा देथ। फिर का हल—एतना करइते चार गहँकी तइयार। पाँच गो बेयाना हाजिर।

बाकि ऊ तो पसेने-पसेने, हाँफइत, पोंछइत कल्लू के पैर निहारथ, जीतू के जूता निरेखथ। पचाक से मुँह में भरल पिलकी फेंक के कहे लगथ—'ई देखऽ आउ ऊ देखऽ। एगो हम्मर बनावल आउ एगो बाटा के। एगो मुँह बयले हे, एगो चमगादर लेखा सटल हे। दुन्नो के मिलान करऽ, दाम में केतना के फरक हे। बाटा के होयला से का होवऽ हे। तूँ लोग तो डिजाइन पर मरबऽ। टिकाऊ होवे चाहे न, देखनग होवे के चाही—जइसे लगऽ हे कि एकरे में मुँह निहारे ला हे। अरे भाई ! जूता पेन्हे ला हे कि मुँह देखे ला। तीन साल पेन्हलन होवे आउ दू साल अभी पेन्हतन। का हो कल्लू भाई ! झूठ कहित ही तऽ कहिहऽ। कै पइसा देलऽ हल ? बिआहो कर लेलऽ बेटा के। हमरे जूता पेन्ह के समधी बनके पैरो पुजा अयलऽ। भउजी के कहला पर बनइली हल आउ तनि बुनियो न खिलयलन।'

ई तरह से ऊ अप्पन जूता के परचार करऽ हलन, जूता के बिकरी करऽ हलन। जे पेन्हलक से दाम सधा के छोड़लक। इनकर एगो आउ सिफत हल—जूता टूट

गेला पर मुफ्त सिलाई, बिना पइसा के मरम्मत; गारंटी तीन साल, बीच में टूट गेला पर पइसा वापस इया जूता बदली। इहे से इनका भिर भीड़ लगल रहऽ हल। गारंटी के पहिले जूता टूट गेला पर बड़ी छान-बीन करऽ हलन। बड़ी गौर से देखऽ हलन—का कारन हे ? हम्मर ईमान आउ कला पर दाग तो न लग रहल हे। कभी जूता देखथ, कभी गहँकी के मुँह—'दू पइसा के रेंड़ी के तेल न जुटऽ हलवऽ। आउ न हलवऽ तऽ हमरो हीं से ले जाय ला छुट्टी न हलवऽ। अपने खा पीअऽ हऽ कि न, देह में तेल घँसऽ हऽ कि न ? जिन्दा चाम के तेल चाही आउ मरला के ? मरल चाम तो तेले से ठहरबे करऽ हे।'

एतना कहके ठाँय-ठाँय जूता के जमीन पर पटकथ, फिर कहथ—'जन्ने जयबऽ ओन्ने घँसेटले चलबऽ। एकरा जान हइ कि न ? गरमी में कइसे पसेना छुटऽ हवऽ। पेड़ के छाँह तर बइठ के अराम चाहऽ हऽ। चाम हइ तऽ का, एकरा अराम न चाही। देखऽ तो—सरधे मुँह बयले कीचड़-पानी में घँसेटले चललऽ। ई न कि चार आना के एगो चट्टी खरीद लीं। टूटइ नऽ, कीचड़ में गाड़ देबऽ, तऽ कै दिन ठहरतइ। मिल गेलन हे सनीचर, सस्ता दोकनदार–चलऽ फेंक आवऽ, बनयतन न तऽ कहाँ जयतन। जबले सनीचर हथ तबे ले, फिर तो अफसोस करबऽ। एही जुतवा ला तरसबऽ। एतना कहइत एगो चिप्पी साट देथ—चार गो काँटी ग़ार देथ आउ फेंक देथ गहँकी दन्ने। जादे खराब होयथ तऽ एक-दू दिन मौका लेथ।

कोई इनकर जूता के सिकाइत कर देवे, तऽ झट से जेबी से पइसा निकाल के कहथ—'निकाल दऽ जूता, ई लऽ अप्पन दाम वापस।' बाकि वापस के लेवऽ हे—ऊ तो एगो खिलवाड़ हल, मजाक हल उनका कउँचावे ला। सनीचर के जेतना जूता बिकल ओकरा से जादे ऊ परसंसा पयलन। जन्ने जयतन ओन्ने झोला टाँगले–दू जोड़ा काँख तर, एक जोड़ा हाथ में। केकरो दूरा पर बइठ जयतन—कोई सरबत ला पूछइत हे, कोई सतुआ ला, कोई खइनी खिलावइत हे; कोई बीड़ी पिलावइत हे। कोई मड़ुआ के रोटी खिला रहल हे, कोई नयका धान के चूड़ा फँका रहल हे। केकरो हीं भूँजा, केकरो हीं फुटहा जरूर मिलत इनका। ई सब इनकर जूता के ईनाम हे, काम आउ कला के मजूरी हे। इनकर व्यक्तित्व के परसंसा हे।

उनकर व्यक्तिव में चार चाँद लगावेओला एगो आउ गुन हल—बाजा पर नाचे के गुन, दुआरी लगइत खानी छड़पे के गुन। इनकर बाजा में कठघोड़वा के नाच न जा

हल। मोर-मोरनी के नाम ऊ घड़ी न हल। नाम हल सनीचर के नाच के, डोमन के बाजा के। डोमन बजावऽ हलन डंका, सनीचर बजावऽ हलन झाल। जइसन सनीचर नाचे ओला ओइसने डोमन बजावे ओला। डोमन के चाप आउ सनीचर के ताल बड़ा मेल खा हल। जखनी सनीचर नाचे लगऽ हलन तखनी डोमन के चाप डंका पर साँप लेखा झनझनाये लगऽ हल। बिजली के कड़क आउ देवाल गिरला के अवाज होवऽ हल इनकर डंका से।

खुस होके कोई नोट साटइत हे, कोई इनाम गछइत हे—धोती के इनाम, लुगा के इनाम, इनामे इनाम, वाह रे सनीचर ! कमाल कर देलन ! बेटिहा चेहा जाये, कठघोड़वा के धेयान भुला जाये। अइसन नाच बाजा पर ! ओहू अदमी के नाच ! केतना फुरती हे सरीर में, कइसन कलाबाजी हे कमर में। कोई पेन्हावा न, कमर पर से धोती, एगो गोल गला गंजी इया कुरता, माथा में गमछा । हँऽ, गमछा लाजवाब, रंगीन, झक-झक। माथा में अइसन बान्धऽ हलन कि नाचित खानी ऊ पंछी के दूगो पाँख लेखा, हवाई जहाज के डैना लेखा बन जा हल। देख के लगे कि कोई चील मड़रा रहल हे, कोई जहाज हवा में तैर रहल हे।

एन्ने दुआरी लगल खतम, ओन्ने सनीचर परेसान। लोग जुटल हथ सट्टा लिखावे ला, बेयाना देवे ला, बाकि सब पहिलहीं से बुक। एकाध गो लगन बचइत हे, तऽ ओकरा ला झगड़ा, मारामारी के नौबत। सनीचर केकर सट्टा लिखथ, ई लेल पसेने-पसेने, गिल-पिल। अन्त में निरनय भेल कि अभी खायल-पिअल जाय, देखऽ, लइका के बोलहटा आ गेल। उठऽ हो डोमन, तनि ठोकऽ ताल। सनीचर उठके ताल ठोके के पहिलहीं एक छलाँग मार देथ, घोड़ा लेखा हिनहिना देथ। समियाना हिल जाय। बरतिअन अकचका जाय—'का भेल ?'

कुच्छो न, सनीचर के घोड़ी बेहाथ हो गेल हे। वाह रे सनीचर ! सब कोई ओनहीं ताक के हँसे लगथ, ठहाका मारे लगथ। अइसन हल उनकर गोर में फुरती, देह में चुस्ती। अन्तिम घड़ी बेचारे थक गेलन हल, तइयो टिटकारी मारला पर हिनहिनाए लगऽ हलन। सचमुच घोड़ा हलन, बाजा के अवाज सुनइते हिनहिनाये लगऽ हलन, ताल पर जमे लगऽ हलन। सरीरो हल घोड़े लेखा गठल ! गोर भक-भक, रूपगर भी ओइसने। जखनी केकरो हीं मिलल पिअरी पहिर लेवऽ हलन, तखनी उनकर रूप देखे जुकुर हो जा हल।

बाकि ई रूप उनकर लगने भर रहऽ हल। असाढ़ चढ़इते धरती मइया के गोदी में । ऊ घड़ी देखऽ मजदूर किसान वला उनकर रूप । कभी हाथ में कुदाल,

कभी कान्हा पर हर। हर जोतऽ हलन त नाचऽ हलन। डोमन के डंका पर टिटकारी मारऽ हलन। हँऽ, इनका से बोझा न चलऽ हल। सच पूछऽ तऽ लचारी में बेचारे ई काम करऽ हलन। जूता बनावे में उनका जादे मन लगऽ हल।

अब बेचारे न हथ। एक दिन उधरे से जाइत हली। उनकर झोपड़ी भिर पहुँच के पुकारली—'सनीचर चा हऽ हो ?'

कुछ देरी के बाद उनकर पुतोह आयल। बड़ी दुख भर के बोलल—'आयँ, न जानइत ही अपने, ऊ सावने में मर गेलन, ठीक अमावस के दिन।'

आज ऊ न हथ, बाकि उनकर नाम हे। उनकर जूता न हे, बाकि उनकर कला आउ ईमान के नाम आज भी हे। आजो कउनो बात में परतुक दिआ हे—'अरे, का सनीचर के जूता लेखा टाँगले चलइत हऽ।' हिरदय रो उठऽ हे, मन मसोस जाहे—अभी ऊ जिन्दा रहतन हल।

सनीचर के साथे उनकर कला भी बिला गेल, उनकर ईमान भी उपह गेल। कोई करिये का सकऽ हे। कला के जिन्दा रक्खेला कसउटी चाही, ईमान के बचावेला इन्सान चाही। आज न तो कसउटी हे न इन्सान। तऽ हे का ? खाली देखावटी–बनावटी—ऊपर ढोल, भीतर से पोल। टिप-टौप जादे। देखा-देखी सब डलडे में छना रहल हे, बिना दूधे के पकवान बन रहल हे। घीउ कहाँ से आवे; दूध कहाँ से मिले, सब तो किनारा कस लेलक हे। इहाँ कदर कहाँ, कसउटी कहाँ जे ठहरे। जे हे सेहू पछता रहल हे, हुलुक रहल हे, भागे ला मौका ढूँढ़ रहल हे। मिलावट के जुग में खाँटी कहाँ ? खाँटी हे भी, तऽ बिस्वास कहाँ ? जब बिस्वासे उठ गेल, तऽ इन्सान रह के करत का ? ठीक भेल—बेचारे सनीचर चल गेलन, इज्जत-पानी से निबह गेलन।

## अभ्यास-प्रस्न

**मौखिक :**

1. (क) सनीचर के जूता बनावे के का खूबी हल ?

   (ख) सनीचर जूता कइसे बनावऽ हलन ?

   (ग) सनीचर अप्पन जूता के करमात कइसे देखावऽ हलन।

(घ) 'सनीचर के घोड़ी बेहाथ हो गेल हे'—एकर भाव समझावऽ।

(ङ) सनीचर के सरीर के फुरती कइसन हल ? बतावऽ !

**लिखित :**

1. सब्द-चित्रकार घमंडी राम के परिचय पाँच वाक्य में दऽ।
2. सनीचर अप्पन काम के बिजनेस न बनयलन हे, एकर कारन का हे ? एकरा पर चार वाक्य लिखऽ।
3. जब सनीचर नाचे लगऽ हलन तब कइसन माहौल पैदा हो जा हल ?
4. सनीचर जब बोलऽ हलन तब ओकर परभाव सुनेवला पर कइसन पड़ऽ हल ?
5. 'भउजी के कहला पर बनइली हल आउ तनि बुनिओ न खिलयलऽ'—एकरा में तोरा समझ से कउन भाव प्रकट हो रहल हे ?
6. 'सनीचर एगो ईमानदार कारीगर हलन'—ई साबित करेला उनकर पाँच गो बिसेसता बतावऽ ।
7. 'चाम हइ तऽ का समझइत हलहुँ, एकरा अराम न चाहीं'—एकर माध्यम से सनीचर अप्पन हिरदय के कउन भाव बतावेला चाहऽ हलन ?
8. 'एन्ने दुआरी लगल, ओन्ने सनीचर परेसान'—ई पंक्ति के पाठ में लावे के रहस्य बतावऽ ?
9. पहिले के बिआह आउ आज के बिआह के ठाट-बाट में का अंतर हे ?
10. नीचे लिखल पंक्ति के व्याख्या करऽ :—

    आज तो कसउटी हे न इन्सान। तऽ हे का ? खाली देखावटी, बनावटी—ऊपर ढोल, भीतर पोल। टिप-टौप जादे। देखा-देखी सब डलडे में छना रहल हे, बिना दूधे के पकवान बन रहल हे, घीउ कहाँ से आवे।

11. आज सनीचर तोरा सामने ठाड़ हो जयतन, तब तोर मनोदसा पर का प्रभाव पड़त ? पाँच वाक्य में बतावऽ ?

**भासा-अध्ययन :**

12. पाठ से पाँच गो मुहावरा चुनके ओकर अर्थ बतावऽ ।
13. पाठ के चार गो सहचर सब्द बतावऽ ।
14. पाठ में मगही भासा के अलावे दोसर भासा के आयल सब्द बतावऽ ।

**योग्यता-विस्तार :**

1. सब्द-चित्र का हे ? कोई अइसने सब्द-चित्र लिखऽ ।
2. मगही इया हिन्दी के कोई सब्द-चित्र चुन के लावऽ आउ किलास में सुनावऽ।

**सब्दार्थ :**

| | | |
|---|---|---|
| सपर के | — | सोच के |
| डिजाइन | — | नमूना |
| धँगच के | — | कचड़ के |
| चमरुआ | — | चाम के बनल |

●●●